

10वीं सतत् विकास रिपोर्ट 2025

प्रलम्ब के लिये:

[सतत् विकास लक्ष्य \(SDG\)](#), [सतत् विकास रिपोर्ट \(SDR\)](#), [ब्रुनडलैंड आयोग रिपोर्ट, 1987](#), [रियो पृथ्वी शिखर सम्मेलन, 1992](#), [जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौता](#), [राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम](#), [सौभाग्य योजना](#), [UNFCCC](#), [ग्रीन बॉण्ड](#), [संयुक्त राष्ट्र](#), [वशिव बैंक](#), [IMF](#)।

मेन्स के लिये:

सतत् विकास लक्ष्य कार्यान्वयन की वर्तमान स्थिति, सतत् विकास लक्ष्य कार्यान्वयन में प्रगति और चुनौतियाँ, सतत् विकास लक्ष्य को पूर्णतः साकार करने हेतु आवश्यक कदम।

[स्रोत: इकॉनोमिक टाइम्स](#)

चर्चा में क्यों?

संयुक्त राष्ट्र के [सस्टेनेबल डेवलपमेंट सॉल्यूशंस नेटवर्क](#) की 10वीं [सतत् विकास रिपोर्ट \(SDR\)](#) 2025 के अनुसार, भारत ने [सतत् विकास लक्ष्य \(SDG\)](#) सूचकांक में 99वाँ स्थान प्राप्त किया है। यह पहली बार है जब भारत ने 167 देशों में से शीर्ष 100 में स्थान बनाया है और इसका स्कोर 67 रहा है।

- यह स्कोर 0 से 100 के पैमाने पर प्रगति को मापता है, जहाँ 100 का अर्थ है कि देश ने सभी 17 सतत् विकास लक्ष्यों (SDG) को प्राप्त कर लिया है और 0 का अर्थ है कि कोई प्रगति नहीं हुई है।
- यह सतत् विकास लक्ष्य (SDG) सूचकांक में इसकी पूर्ववर्ती रैंकिंग (जैसे, वर्ष 2024 में 109वीं, वर्ष 2023 में 112वीं) की तुलना में महत्वपूर्ण सुधार दर्शाता है।

10वीं सतत् विकास रिपोर्ट (SDR) 2025 के प्रमुख नष्कर्ष क्या हैं?

- वैश्विक SDG प्रगति की स्थिति: आकलनों से पता चलता है कि केवल 17% सतत् विकास लक्ष्य (SDG) लक्ष्यों को वर्ष 2030 तक पूरा किया जा सकेगा, जो वैश्विक प्रगति में गंभीर मंदी को दर्शाता है।
 - इस स्थिति के पीछे सशस्त्र संघर्ष, संरचनात्मक कमज़ोरियाँ और सीमित वित्तीय संसाधन जैसी चुनौतियाँ हैं, जो SDG के प्रभावी कार्यान्वयन में लगातार बाधा बन रही हैं।
- शीर्ष प्रदर्शनकर्त्ता: नॉर्डिक देश सतत् विकास लक्ष्य रैंकिंग में शीर्ष पर हैं, जिनमें फिनलैंड (प्रथम), स्वीडन (द्वितीय) और डेनमार्क (तृतीय) शामिल हैं, विशेष रूप से, शीर्ष 20 देशों में से 19 यूरोपीय हैं।
 - पूर्व और दक्षिण एशिया ने वर्ष 2015 के बाद से सबसे त्वरित क्षेत्रीय प्रगति दिखाई है। भारत बांग्लादेश (114वाँ) और पाकिस्तान (140वाँ) से आगे है, लेकिन भूटान (74वाँ), नेपाल (85वाँ), श्रीलंका (93वाँ) और मालदीव (53वाँ) से पीछे है।
- SDG में सफलताएँ और चुनौतियाँ: अधिकांश देशों ने बुनियादी सेवाओं और बुनियादी ढाँचे पर मज़बूत प्रगति की है, विशेष रूप से मोबाइल ब्रॉडबैंड एवं इंटरनेट उपयोग (SDG 9), वित्तियत पहुँच (SDG 7) और पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों एवं नवजात मृत्यु दर में कमी (SDG 3) के मामले में।



- हालाँकि, वर्ष 2015 के बाद से पाँच लक्ष्यों में उल्लेखनीय गतिवट देखी गई है: मोटापा दर (SDG 2), प्रेस स्वतंत्रता (SDG 16), नाइट्रोजन प्रबंधन (SDG 2), रेड लसिट इंडेक्स (SDG 15) और भ्रष्टाचार धारणा (SDG 16)।

- बहुपक्षवाद पर रैंकगि: बारबाडोस, जमैका और त्रिनिदाद एवं टोबैगो संयुक्त राष्ट्र के बहुपक्षवाद के प्रतिसबसे अधिक प्रतबिद्ध शीर्ष 3 देश हैं।
 - **G20** देशों में ब्राज़ील सर्वोच्च स्थान पर (25वें स्थान पर) है और **आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन (OECD)** देशों में चिली सबसे आगे (7वें स्थान पर) है, जबकि सतत् विकास लक्ष्यों (SDG) के वरिष्ठ और पेरिस समझौते तथा **वशिव स्वास्थ्य संगठन (WHO)** से हटने के कारण संयुक्त राज्य अमेरिका लगातार दूसरे वर्ष सबसे अंतिम स्थान (193वें स्थान) पर है।
- सतत् विकास लक्ष्यों के प्रतबिद्ध प्रतबिद्धता: एजेंडा 2030 (2015-2025) के एक दशक बाद, संयुक्त राष्ट्र के 193 में से 190 सदस्य राष्ट्र सर्वेच्छक राष्ट्रीय समीक्षा (VNR) प्रक्रिया में भाग ले चुके हैं, जिसके माध्यम से उन्होंने सतत् विकास लक्ष्यों (SDG) में हुई प्रगति और अपनी प्राथमिकताओं को साझा किया है।
 - केवल हैती, म्यांमार और संयुक्त राज्य अमेरिका ने इस प्रक्रिया में भाग नहीं लिया है।
- वैश्विक वित्तीय संरचना: रपिर्ट ने खंडति वैश्विक वित्तीय संरचना (GFA) की आलोचना की है, तथा इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि पूंजी का प्रवाह असमान रूप से संपन्न राष्ट्रों की ओर होता है, जबकि उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (EMDE) की उपेक्षा की जाती है।

सतत् विकास लक्ष्य क्या हैं?

- परिचय: सतत् विकास लक्ष्य (SDG) में कुल 17 परस्पर जुड़े लक्ष्य (169 लक्ष्य) शामिल हैं। इनका उद्देश्य गरीबी, असमानता, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय क्षरण जैसी प्रमुख वैश्विक चुनौतियों का समाधान करना है।
 - इन्हें वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र के 193 सदस्य राष्ट्रों द्वारा सतत् विकास के लिये 2030 एजेंडा के हिस्से के रूप में अपनाया गया था।
- उद्देश्य: सतत् विकास लक्ष्यों (SDG) का उद्देश्य वैश्विक सहयोग के माध्यम से वर्ष 2030 तक शांति, समृद्धि और स्थायित्व को बढ़ावा देना है।
- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: सतत् विकास की अवधारणा को सबसे पहले 1987 की ब्रंटलैंड आयोग की रपिर्ट में प्रभाषित किया गया था, जिसमें इसे ऐसा विकास बताया गया जो भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं से समझौता किये बिना वर्तमान की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।
 - वर्ष 2000 में गरीबी, भुखमरी, रोग, नरिक्षरता, पर्यावरण क्षरण और लैंगिक असमानता से निपटने के लिये सहस्राब्दी विकास लक्ष्य (MDG) अपनाए गए थे, जिनमें 1990 के स्तर के आधार पर वर्ष 2015 के लिये लक्ष्य निर्धारित किये गए थे।
 - वर्ष 2002 में रथि+10 के तहत जोहान्सबर्ग घोषणा के माध्यम से 1992 के रथि अर्थ समिति के परिणामों की समीक्षा की गई।
 - वर्ष 2012 में रथि+20 समिति ने सतत् विकास लक्ष्यों (SDG) तथा एक अधिक व्यापक वैश्विक विकास एजेंडा की नींव रखी।
- सतत् विकास लक्ष्य के मूल सिद्धांत:
 - सार्वभौमिकता: यह सभी देशों- विकास और विकासशील पर समान रूप से लागू होते हैं।
 - एकीकरण: सभी लक्ष्य आपस में जुड़े हुए हैं; एक लक्ष्य में प्रगति से अन्य लक्ष्यों को भी बल मिलता है।
 - किसी को पीछे न छोड़ना: यह हाशयि पर रह गए और कमजोर वर्गों को प्राथमिकता देता है।
 - बहु-हतिधारक दृष्टिकोण: इसमें सरकारों, व्यवसायों, नागरिक समाज और नागरिकों की सामूहिक कार्रवाई की आवश्यकता होती है।
- निगरानी: वैश्विक सतत् विकास रपिर्ट (GSDR) प्रत्येक 4 वर्षों में सतत् विकास लक्ष्यों (SDG) की प्रगति का मूल्यांकन करती है।
- सहायक समझौते:
 - आपदा जोखिम न्यूनीकरण हेतु सेंडाई फ्रेमवर्क आपदा प्रतरोधक क्षमता को सशक्त बनाती है।
 - सतत् विकास के वित्तपोषण हेतु अदीस अबाबा एकशन एजेंडा एक वैश्विक वित्तीय ढांचा प्रदान करती है।
 - जलवायु परिवर्तन से निपटने हेतु जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौता।

सतत् विकास लक्ष्य (SDG) प्रदर्शन में भारत की बेहतर रैंकगि में कनि पहलों ने योगदान दिया है?

SDG	लक्ष्य का शीर्षक	प्रमुख सरकारी पहल
SDG 1	शून्य गरीबी	प्रधानमंत्री आवास योजना (PMAY) गरीबों के लिये कफायती आवास सुनिश्चित करने हेतु। मनरेगा ग्रामीण क्षेत्रों में सुनिश्चित रोजगार उपलब्ध कराने हेतु। प्रधानमंत्री जन धन योजना (PMJDY) वित्तीय समावेशन हेतु।
SDG 2	शून्य भुखमरी	कुपोषण की समस्या से निपटने के लिये पोषण अभियान। सब्सिडी वाले खाद्यान्न प्रदान करने के लिये राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA)। कोविड-19 के दौरान मुफ्त भोजन उपलब्ध कराने के लिये PM गरीब कल्याण अन्न योजना।

SDG 3	अच्छा स्वास्थ्य एवं कल्याण	(PMGKAY)। शिशु एवं मातृ टीकाकरण के लिये मशिन इंडरधनुष। प्रतिपरिवार ₹5 लाख तक का स्वास्थ्य बीमा कवर प्रदान करने के लिये आयुष्मान भारत (PM-JAY)। बेहतर स्वास्थ्य के लिये राष्ट्रीय स्वास्थ्य मशिन (NHM) 2013।
SDG 4	गुणवत्तापूर्ण शिक्षा	समग्र स्कूली शिक्षा के लिये समग्र शिक्षा अभियान। डिजिटल और कौशल आधारित शिक्षा के लिये राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP), 2020। ऑनलाइन शिक्षा के लिये दीक्षा मंच।
SDG 6	स्वच्छ जल एवं स्वच्छता	स्वच्छ भारत मशिन ने खुले में शौच मुक्त (ODF) दर्जा प्राप्त करने में सहायता की। जल जीवन मशिन पाइपयुक्त जल आपूर्ति उपलब्ध कराएगा। गंगा नदी के पुनर्जीवन हेतु नमामि गंगे
SDG 7	कफायती और स्वच्छ ऊर्जा	LED बल्बों के वितरण हेतु उजाला योजना सर्वत्र बजिली की उपलब्धता हेतु सौभाग्य योजना
SDG 8	समर्थ कार्य और आर्थिक वृद्धि	मेक इन इंडिया से वनिर्माण को बढ़ावा मिला। स्टार्टअप इंडिया नवाचार को बढ़ावा देता है। कौशल भारत मशिन व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करता है। पीएम इंटरनशिप योजना के तहत 5 वर्षों में 1 करोड़ छात्रों को इंटरनशिप का अवसर दिया जाएगा।
SDG 11	सतत शहर और समुदाय	स्मार्ट सिटी मशिन के तहत 100 सतत शहर विकसित किये जाएंगे। शहरी बुनियादी ढाँचे में सुधार हेतु AMRUT
SDG 13	जलवायु कार्रवाई	जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना (जैसे, ग्रीन इंडिया मशिन) अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) नीति आयोग SDG इंडिया इंडेक्स
SDG 15	स्थानीय जीवन	वन्यजीव संरक्षण हेतु प्रोजेक्ट टाइगर और प्रोजेक्ट एलीफेंट CAMPA- प्रतिपूरक वनरोपण नधि मृदा संरक्षण हेतु मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना क्षरति वनों की पारसिथितिकी पुनरस्थापन हेतु राष्ट्रीय वनरोपण कार्यक्रम (NAP)

		जैविक संसाधनों के संरक्षण तथा उनके सतत उपयोग को सुनिश्चित करने के लिये जैविक विविधता अधिनियम, 2002
SDG 16	शांति, न्याय और मज़बूत संस्थाएँ	पारदर्शी शासन के लिये डिजिटल इंडिया और पुलिस आधुनिकीकरण
SDG 17	लक्ष्यों के लिये साझेदारी	अंतर्राष्ट्रीय बगि कैट एलायंस का उद्देश्य सात प्रमुख बड़ी बलिली प्रजातियों का संरक्षण और सुरक्षा सुनिश्चित करना है। आपदा रोधी अवसंरचना के लिये गठबंधन (CDRI) आपदा रोधी अवसंरचना विकास को बढ़ावा देगा। ग्रभाशय ग्रीवा कैंसर की रोकथाम और उपचार हेतु कवाड कैंसर मूनशाट

सतत विकास लक्ष्य (SDG) की प्राप्ति में धीमी प्रगति के लिये कौन-से कारक ज़िम्मेदार हैं?

- वैश्विक संघर्ष: यूक्रेन, गाज़ा, सूडान और अन्य क्षेत्रों में चल रहे संघर्षों ने सबसे बड़े वैश्विक वसिस्थापन संकट को जन्म दिया है, जिसमें 120 मिलियन से अधिक लोग ज़बरन वसिस्थापित हुए हैं, जिससे SDG 16 (शांति, न्याय और मज़बूत संस्थाएँ) की दृष्टि में प्रगति काफी कम हो गई है।
- जलवायु वृत्ति अंतर: UNFCCC का अनुमान है कि जलवायु लक्ष्यों को पूरा करने के लिये विकासशील देशों को 2030 तक 6 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की आवश्यकता होगी; हालाँकि, गंभीर वृत्तिपोषण की कमी से SDG 13 (जलवायु कार्रवाई) पर प्रगति बाधित होने का खतरा है।
- महामारी से उत्पन्न संकट: कोविड-19 महामारी ने वैश्विक विकास को गंभीर रूप से बाधित किया है, गरीबी उन्मूलन (SDG 1) की प्रगति को उलट दिया है, स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों (SDG 3) को कमज़ोर किया है और शिक्षा तक पहुँच (SDG 4) में बाधाएँ उत्पन्न की हैं।
 - इसने विकासशील देशों में स्वच्छ ऊर्जा नविश को भी धीमा कर दिया, जिससे SDG 7 (कफ़ायती और स्वच्छ ऊर्जा) की प्रगति में बाधा उत्पन्न हुई।
- पर्यावरणीय दबाव: जलवायु परिवर्तन, जैवविविधता की हानि और वनोन्मूलन (वनों की कटाई) जैसी बढ़ती चुनौतियाँ पारिस्थितिकी तंत्र के लिये खतरा बन रही हैं, IPCC ने चेतावनी दी है कि 2 डिग्री सेल्सियस तापमान में वृद्धि होने पर 99% तक प्रवाल भित्तियाँ नष्ट हो सकती हैं, जिससे SDG 14 (जलीय जीवन) पर गंभीर प्रभाव पड़ेगा।
- आपदाएँ: बार-बार होने वाली प्राकृतिक आपदाएँ, जिनमें बाढ़, हीटवेव्स और सूखा शामिल हैं; भारी नुकसान पहुँचा रही हैं, सबसे कम विकसित देश (LDC) और स्थलरुद्ध विकासशील देश (LLDC) 2015 और 2022 के बीच वैश्विक आर्थिक आपदा नुकसान का 6.9% वहन कर रहे हैं, जिससे गरीबी और भेद्यता और भी खराब हो रही है, जिससे SDG 1 (गरीबी उन्मूलन) की प्रगति में बाधा आ रही है।

सतत विकास लक्ष्य प्राप्त करने के लिये कौन-सी रणनीति अपनाई जा सकती है?

- वैश्विक शासन को मज़बूत करना: सतत विकास लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिये संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक और IMF जैसे बहुपक्षीय संस्थानों में सुधार करना आवश्यक है ताकि सतत विकास लक्ष्यों के वृत्तिपोषण और नीति संरक्षण के लिये समर्थन बढ़ाया जा सके, सतत विकास लक्ष्यों पर आधारित व्यापार समझौतों को बढ़ावा दिया जा सके जो कार्बन-तटस्थ आपूर्ति शृंखलाओं जैसे नविकर्ष और सतत व्यापार को प्रोत्साहित करते हैं।
 - वास्तविक समय SDG ट्रैकिंग को मज़बूत करना, नागरिक ऑडिट (जैसे, युगांडा) को संक्षम करना और कॉर्पोरेट जवाबदेही के लिये ESG प्रकटीकरण को अनिवार्य बनाना।
- सतत विकास लक्ष्यों के लिये वृत्तिपोषण में वृद्धि: ग्रीन बॉण्ड और मशरूति वृत्ति/ब्लेंडेड फाइनेंस (सार्वजनिक तथा नज़ी नधियों का मशरूण) जैसे प्रणालियों का वसितार करना, सतत विकास लक्ष्यों के कार्यान्वयन के लिये संसाधनों को मुक्त करने हेतु विकासशील देशों को ऋण राहत प्रदान करना एवं जीवाश्म ईंधन से हानिकारक सब्सिडी को नवीकरणीय ऊर्जा व स्वास्थ्य सेवा की ओर पुनर्निर्देशित करना।
- सतत कृषि: मृदा स्वास्थ्य को बहाल करने और उत्सर्जन को कम करने के लिये कृषि पारिस्थितिकी के माध्यम से पुनर्योजी खेती को बढ़ावा देना तथा भंडारण, परिवहन तथा नीतियों में सुधार करके 30% वैश्विक खाद्य अपशिष्ट की समस्या का समाधान करना।
- सतत विकास लक्ष्यों को स्थानीय बनाना: स्थानीय सरकारों और समुदायों को सतत विकास लक्ष्यों से जुड़ी योजनाओं को अपनाने तथा क्रियान्वित करने, पर्याप्त वृत्ति पोषण एवं नगिरानी तंत्र के साथ ज़िला स्तरीय कार्य योजनाएँ विकसित करने व नियोजन और जवाबदेही प्रक्रियाओं दोनों में सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देने के लिये सशक्त बनाना।

नविकर्ष

SDG इंडेक्स के शीर्ष 100 में भारत का प्रवेश गरीबी उन्मूलन, स्वास्थ्य सेवा और स्वच्छ ऊर्जा में प्रगति को दर्शाता है। हालाँकि संघर्ष, जलवायु वृत्ति अंतराल एवं महामारी संबंधी असफलताओं जैसी वैश्विक चुनौतियाँ प्रगति को खतरे में डालती हैं। वर्ष 2030 एजेंडा को प्राप्त करने के लिये तत्काल बहुपक्षीय सहयोग, वृत्तिपोषण सुधार, स्थानीय जुड़ाव तथा केंद्रीत कार्यान्वयन रणनीतियों की आवश्यकता है।

प्रश्न: सतत विकास लक्ष्यों (SDG) को प्राप्त करने में भारत की प्रमुख योजनाओं की भूमिका का मूल्यांकन करें। प्रगति में तेज़ी लाने के लिये और क्या किया जा सकता है?

??????????

(a) जोहांसबरग में 2002 के सतत विकास के पृथ्वी शखिर सम्मेलन में ।
(b) रयिओ डी जेनेरयिओ 2012 के सतत विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन ।
(c) पेरसि में 2015 जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन ।
(d) नई दलिली में वर्ष 2016 विश्व सतत विकास शखिर सम्मेलन ।

1. सतत् विकास को ऐसे विकास के रूप में वर्णित किया जाता है जो भविष्य की पीढ़ियों की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करता है। इस परिप्रेक्ष्य में, स्वाभाविक रूप से सतत् विकास की अवधारणा नमिनलखित में से किस अवधारणा के साथ संबंधित हुई है? (2010)

- (a) सामाजिक न्याय और सशक्तीकरण
(b) समावेशी विकास
(c) वैश्वीकरण
(d) वहन क्षमता

?????

1. वहनीय, वशिवसनीय, सतत् और आधुनकि ऊरजा तक पहुँच सतत् वकिस लक्ष्यों (SDG) को प्राप्त करने के लयि अनविर्य है।” भारत में इस संबंघ में हई परगतिपर टपिपणी कीजयि। (2018)